दादा भगवान परिवार का।

अक्टूबर २०२३

शुल्क प्रति नकल : ₹ २०/-

अक्रम एक्सप्रेस

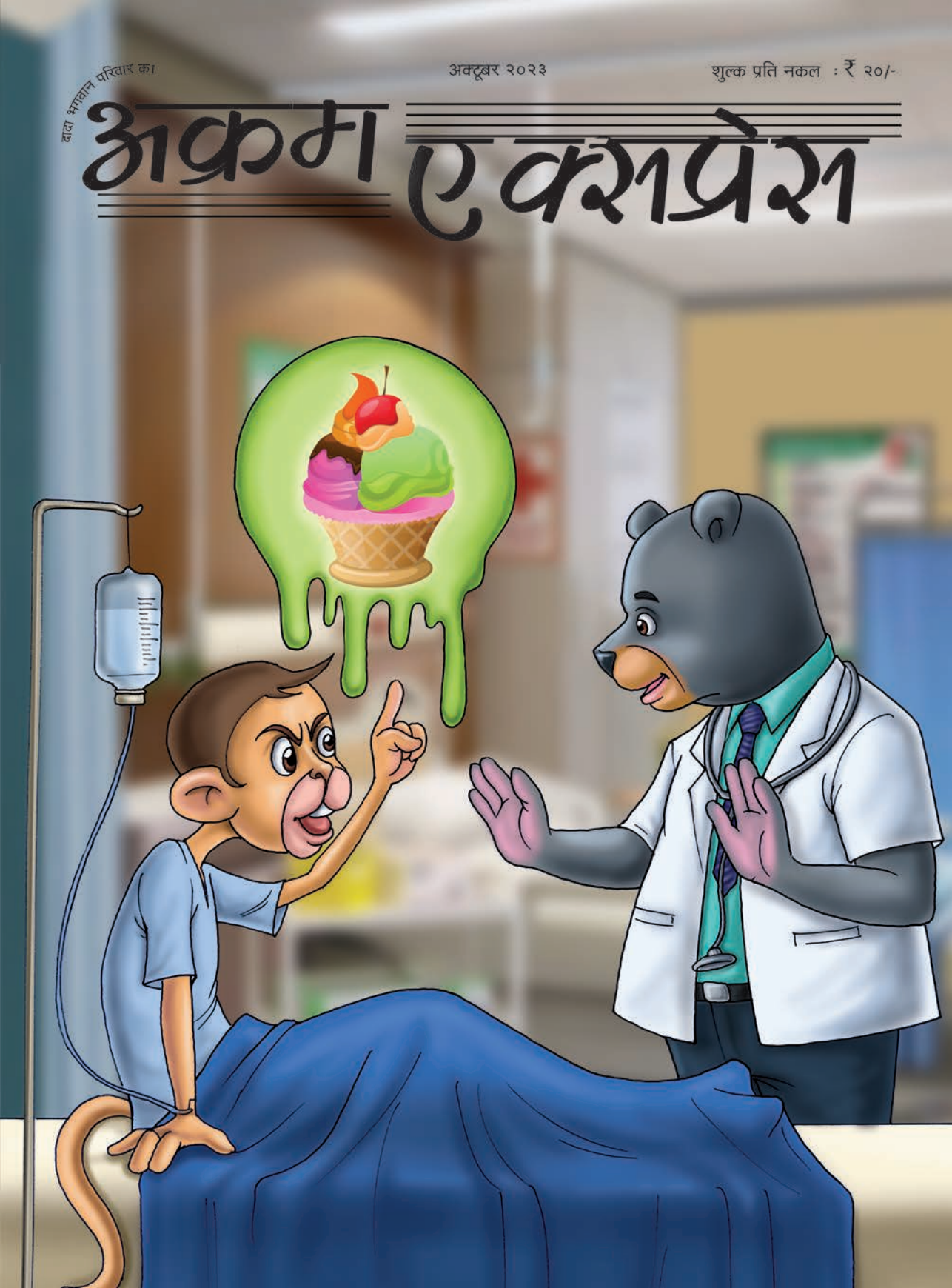

चाहिए, लेकिन मिलता नहीं?

अक्रम एक्सप्रेस

वर्ष : ११ अंक : ७
अखंड क्रमांक : १२७
अक्टूबर - २०२३

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : ९३२८६६११६६/७७
email:akramexpress@dadabhagwan.org

Editor: Dimple Mehta

Printer & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Owned by and Published from
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Printed at
Amba Multiprint
Opp. H B Kapadiya New High School,
Chhtral-Pratappura Road,
At-Chhatral, Tal. Kalol
Dist. Gandhinagar – 382729.

© 2023, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

संपादकीय

मैं कितनी पढ़ाई करता हूँ, फिर भी मेरे अच्छे मार्क्स क्यों नहीं आते? मुझे घूमने जाना था लेकिन बुखार आ गया, मुझे आइस्क्रीम खाना है लेकिन डॉक्टर ने मना किया है।

क्या आपके साथ ऐसा कभी होता है कि आपको कुछ चाहिए और वह मिलता नहीं है? ऐसा क्यों होता होगा? अंतराय के कारण!

अंतराय अर्थात् क्या? क्या करने से अंतराय पड़ते हैं? क्या करने से अंतराय टूटते हैं? नेगेटिविटी का अंतराय के साथ क्या कनेक्शन है? चलिए, दादाश्री की वाणी, कुछ उदाहरण, स्टोरिज़ और ओली के चैलेन्ज के द्वारा दादाश्री के अंतराय के साइन्स को समझें और दोबारा अंतराय न पड़े इसके लिए जागृत रहें।

- डिम्पल मेहता

चलो खेलें...

इधर-उधर बिखरी हुई चीज़ों को उनकी जगह बताओ।

ज्ञानी कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : अंतराय क्या है?

दादाश्री : हमें ज़रूरत की चीज़ मिलती नहीं और अपना इच्छित नहीं हो पाता तो वे सब अंतराय हैं। अंतराय अर्थात् हमारी इच्छा अनुसार सफलता नहीं मिलना। अंतराय चीज़ों को मिलने से रोकते हैं। हम ढूँढ़ते हैं लेकिन मिलती नहीं हैं, वह हमारे अंतराय हैं।

प्रश्नकर्ता : अंतराय कैसे पड़ते हैं?

दादाश्री :

१. किसी को रोका वही अंतराय। लोगों को जो प्राप्त हो रहा हो, उसमें आप बुद्धि से रुकावट डालते हो कि, इसमें देने जैसा क्या है? उससे आपको अंतराय पड़ते हैं।

उदाहरण के तौर पर :

- किसी गरीब आदमी को कोई पैसे दे रहा हो और आप उस व्यक्ति को पैसे देने से रोकें, तो आपको पैसों के अंतराय पड़ते हैं।
- कोई सत्संग में आने को तैयार हो और आप मना करो तो आपको (सत्संग में जाने के) अंतराय पड़ते हैं।

२. नेगेटिव बोलने से बहुत अंतराय पड़ते हैं।

उदाहरण के तौर पर:

- कोई आम खाने को दे और हम कहें कि आम-वाम मुझे पसंद नहीं है, मैं नहीं खाऊँगा, तो हमें आम खाने के अंतराय पड़ते हैं। भविष्य में आम खाने की इच्छा हो तो भी आम नहीं मिलेंगे।
- कोई अच्छे कपड़े पहनकर जा रहा हो और हम कहें कि यह तो बेकार में पैसे खर्च करता है, तो हमें अच्छे कपड़े के अंतराय पड़ते हैं।
- एक दिन बगीचे से उकता गया हो और कहे कि इस बगीचे में कभी आने जैसा नहीं है, फिर कभी वहाँ जाना हो न, तब अपना ही डाला हुआ अंतराय सामने आता है और बगीचे में जाने नहीं मिलता है।

चलो खेलें...

साइन्टिस्ट को रोकेट तक और सैटेलाइट को चंद्र तक पहुँचाओ।

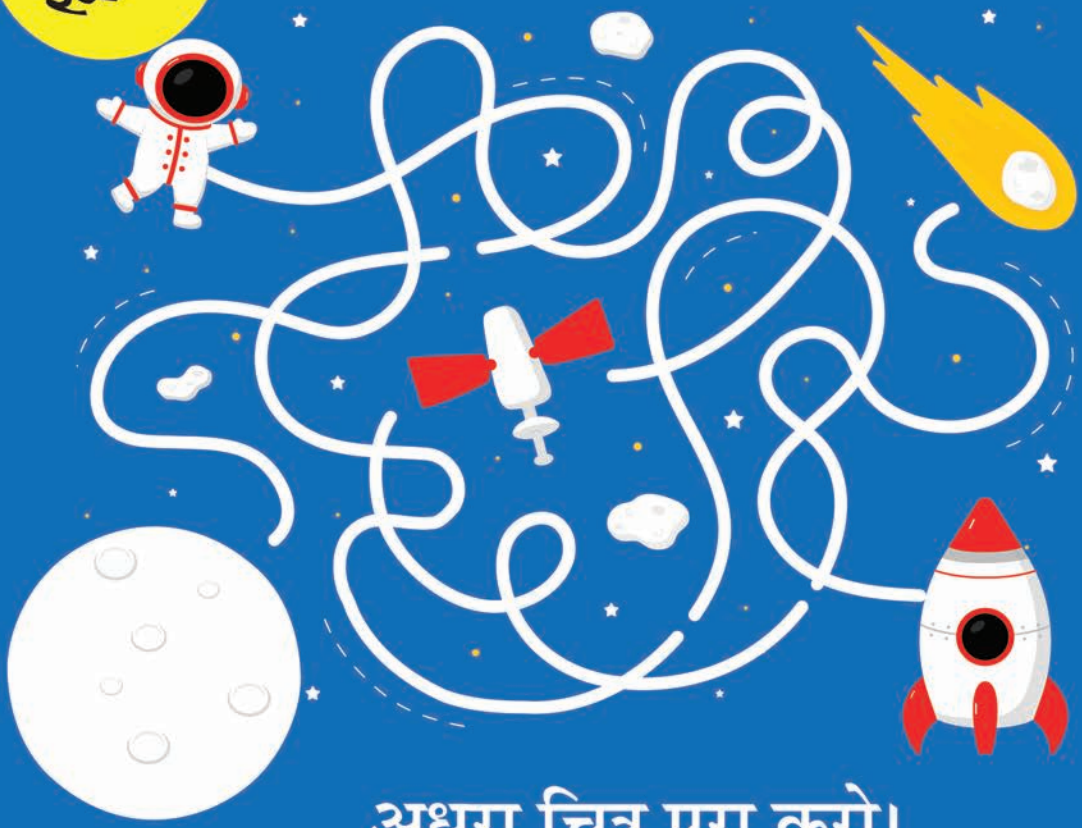

अधूरा चित्र पूरा करो।

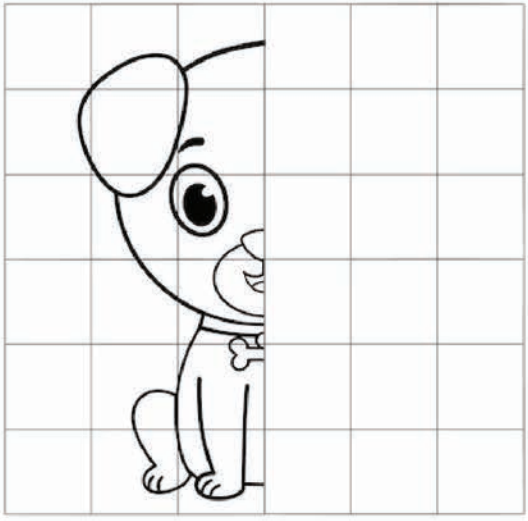

नेगेटिव बोलने से
अंतराय पड़ते हैं लेकिन
पॉज़िटिव से अंतराय नहीं पड़ते।
उदाहरण के तौर पर : किसी के
अच्छे मार्क्स आए हों, तब उसका
पॉज़िटिव देखने के बजाय उसका नेगेटिव
देखें कि यह तो टीचर को मस्का
मारकर आगे बढ़ता है, तो हमें
अच्छे मार्क्स प्राप्त करने में
अंतराय आते हैं।

यह तो

मुझे तो आता ही नहीं,
ऐसा बोलकर अंतराय डाले
हैं। मुझे आता है ऐसा
बोलने से अंतराय टूटते हैं।

निश्चय करने से अंतराय टूटते हैं।
उदारहण के तौर पर : साइकिल चलाना सीखने में मुश्किल हो रही हो और हम स्ट्रोंग निश्चय करें कि मैं सीख ही जाऊँगा, तो मुश्किलें दूर हो जाती हैं।

नई ही बात है!

किसी को नालायक कहते हो तो आपकी योग्यता पर अंतराय पड़ते हैं! अगर उसके तुरंत प्रतिक्रमण कर लो तो अंतराय पड़ने से पहले ही धुल जाते हैं।
उदाहरण के तौर पर : तुम्हें स्पीच देना नहीं आता, ऐसा कहें तो हमें बोलने में तकलीफ पड़ेगी। लेकिन यदि तुरंत माफी माँग लें तो अंतराय धुल जाते हैं।

द विन्ड मिल प्रोजेक्ट

उस दिन सरस्वती स्कूल के बच्चे साइन्स क्लास की बड़ी आतुरता से राह देख रहे थे। राघव सर साइन्स फेर की टीम मेम्बर्स के नाम अनाउन्स करने वाले थे। जैसे ही सर ने क्लास में प्रवेश किया, सबके दिल की धड़कनें बढ़ गईं।

ओके स्टूडन्ट्स, इस बार की हमारी टीम है - आशु, मृनल, ऋग्वेद और निखिल। इस साल प्रोजेक्ट को निखिल शास्त्री लीड करेगा।

नई टीम के लिए ताली बजाने की बजाय क्लास में सन्नाटा छा गया। एक नया आया हुआ लड़का इतने बड़े प्रोजेक्ट को लीड करेगा? निखिल को भी अपना नाम सुनकर हैरानी हुई।

'नेक्स्ट वीक तक मुझे साइन्स फेर के आइडियाज़ बता देना', क्लास खत्म होने के बाद राघव सर ने कहा। टीम ने स्कूल के बाद एक खाली क्लास में मिलना तय किया।

जैसे ही निखिल क्लास में प्रवेश करने गया, उसने टीम की फुसफुसाहट सुनी, 'निखिल शास्त्री! राघव सर की चॉइस को क्या हो गया है? ऋग्वेद को लीडर बनाने जैसा था।'

ये शब्द सुनकर निखिल के दिल को ठेस लगी। उसने अपने आप को संभाला और क्लास में प्रवेश किया। सभी अचानक चुप हो गए।

निखिल ने हिम्मत जुटाकर कहा, 'फेन्ड्स, कुछ अच्छा सोचते हैं! साइन्स बहुत इन्ट्रेस्टिंग सब्जेक्ट है।'

सब सोचने लगे। सबके पास अलग-अलग आइडियाज़ थे। अंत में सब ने 'विन्ड मिल प्रोजेक्ट' बनाना तय किया। राघव सर को आइडिया पसंद आया। टीम ने काम शुरू किया।

विन्ड मिल के ब्लेड्स एक्स-रे रिपोर्ट से बनाने का सोचा। आइडिया तो सरल था लेकिन टीम को चीज़ें आसानी से नहीं मिल रही थीं।

'अरे यार, इतनी सिम्पल चीज़ मिलना इतना डिफिक्लट क्यों है?' आशु और म्रीनल रिपोर्ट ढूँढ़ते-ढूँढ़ते परेशान हो गए थे।

आखिरकार एक सप्ताह तक खोजने के बाद निखिल को अपने अंकल के पास से पुराने रिपोर्ट्स मिले। ब्लेड्स तो बन गए। फिर जनरेटर लाने का काम करने की बारी आई। ऋग्वेद ने ऑनलाइन ऑर्डर देने की जिम्मेदारी ली थी।

'ऋग्वेद, जनरेटर की डिलवरी डेट क्या है?' निखिल ने पूछा।

'ओह नो! मैं तो आर्डर करना बिल्कुल भूल ही गया।' ऋग्वेद की आवाज़ में बहुत अफसोस था। उसने तुरंत ही अपना काम साइड पर रखकर फोन हाथ में लेकर ऑर्डर प्लेस करने के लिए साइट ओपन की।

'क्या हुआ ऋग्वेद? तुम इतने सिरिअस क्यों हो गए?' आशु ने पूछा।

यह आइटम तो आउट ऑफ स्टॉक है। अब हम क्या करेंगे? स्टॉक में आने तक तो हमारे प्रोजेक्ट की सबमिशन डेट निकल चुकी होगी। ऋग्वेद बहुत निराश हो गया।

प्रॉब्लम लेकर सभी राघव सर के पास गए। लेकिन सर ने सबको खुद ही सॉल्यूशन ढूँढ़ने के लिए कहा।

सब घबरा गए। जीतने की बात तो दूर रही, फिलहाल तो प्रोजेक्ट पूरा करना भी कठिन था। म्रीनल तो रुआँसी हो गई।

इस प्रोजेक्ट का नाम 'विन्ड मिल प्रोजेक्ट' के बदले 'रुकावट के लिए खेद है' होना चाहिए था। कोई भी काम आसानी से पूरा नहीं हो रहा है।

'अभी हम सब शांति से घर जाते हैं और घर जाकर थोड़ा सोचते हैं। कोई न कोई सॉल्यूशन ज़रूर निकलेगा।' निखिल ने अपने टीम्मेट्स से कहा। लेकिन किसी को निखिल की बात पर विश्वास नहीं था। सब ने मन ही मन हार मान ली।

शाम को निखिल दूध का ग्लास लेकर बालकनी में बैठा था। उसकी नजर एक साइकिल पर पड़ी और अचानक उसे एक आइडिया आया।

'अरे हाँ! दादाजी की पुरानी साइकिल में डाइनमो है। वह एक प्रकार का जनरेटर ही कहा जाता है न! पैडल मारने

से उत्पन्न हुई मिकैनिकल एनर्जी को वह इलेक्ट्रिकल एनर्जी में कन्वर्ट करता है। विन्ड मिल भी तो इसी सिद्धांत पर काम करती है।'

दूसरे दिन निखिल डाइनमो और एक छोटा लाइट का बल्ब लेकर स्कूल पहुँचा। टीम को उसका आइडिया बहुत पसंद आया। स्कूल के बाद सभी ने प्रोजेक्ट पर काम किया और डाइनमो को विन्ड मिल के साथ कनेक्ट किया। हवा लगने से जब विन्ड मिल की ब्लेड्स घूमने लगीं तब लाइट का बल्ब चमक उठा। सभी ने तालियाँ बजाईं और बहुत उत्साह में आ गए। सबके मन में साइन्स फेर में जाकर अपने प्रोजेक्ट को डिस्प्ले करने की जल्दी थी। प्रोजेक्ट को क्लास रूम के एक कोने में रखकर सभी खुशी-खुशी घर लौटे।

अगले दिन जब स्कूल गए तब अपने प्रोजेक्ट की हालत देखकर सबको धक्का लगा। रात को तेज हवा के साथ बारिश हुई थी। गलती से क्लास रूम की खिड़की खुली रह गई थी। टीम का प्रोजेक्ट पूरी तरह से भीग गया था।

'सब खत्म हो गया', आशु ने कहा।

'हम सर से कह देते हैं कि हमारे स्कूल का नाम कॉम्पिटिशन से वापस ले लें।' मृनल ने धीमी आवाज में कहा।

निखिल भी पूरी तरह टूट गया था। रिसेस में निखिल एक कोने में बैठकर बारिश ने जो उनके प्रोजेक्ट पर पानी फेर दिया था उसके बारे में सोच रहा था। अचानक, राघव सर ने आकर उसके कंधे पर हाथ रखा।

'सर, आइ एम सॉरी। आपने मुझे लीडर चुना, लेकिन मैं फेल हो गया।' निखिल ने निराश होकर कहा।

'तुम जानते हो निखिल, मैंने तुम्हें क्यों चुना था?' सर ने शांति से पूछा।

'नहीं, सर। मैं भी सर्प्राइज्ड़ था जब आपने मुझे सिलेक्ट किया', निखिल ने धीरे से कहा।

'यंग मैन, क्या तुम्हें इस स्कूल में अपना ऐडमिशन प्रोसेस याद है? तुम्हारे पुराने स्कूल की मार्कशीट देखकर हमने पहले तुम्हें रिजेक्ट कर दिया था। लेकिन तुमने हार नहीं मानी। तुम रोज आकर स्कूल के ऑफिस में बैठ जाते थे। आखिरकार, एक दिन तुमने मुझे कन्विन्स कर लिया कि पुराने स्कूल में बीमारी के कारण तुम्हें कम मार्क्स आए थे। और इस स्कूल में ऐडमिशन के लिए सभी टीचर्स को फिर से तुम्हारी एक्ज़ाम लेनी चाहिए। एक्ज़ाम में तो तुम बाद में पास हुए, लेकिन तुम्हारा उत्साह देखकर मैंने तुम्हें पहले ही पास कर दिया था। तब हार नहीं मानी थी तो आज क्यों हार मान ली?' सर ने कहा।

'सर, स्कूल में ऐडमिशन पाने के लिए मैं अकेला था और इस समय मैं टीम के साथ हूँ। मैं उन पर डिपेन्डन्ट हूँ।' निखिल ने कहा।

'लेकिन निश्चय करने या उत्साह बनाए रखने में तो तुम किसी पर डिपेन्डन्ट नहीं हो न!' सर ने पूछा।

निखिल की आँखों में चमक आ गई। वह तुरंत उठ खड़ा हुआ।

उसने सर को थैंक यू कहा और विन्ड मिल की तरफ दौड़ा। वह डाइनमो निकाल कर घर ले गया। जब घर पर टेस्ट किया तो डाइनमो चल रहा था। यानी विन्ड मिल की केवल ब्लेड्स ही खराब हुई थीं।

दूसरे दिन निखिल उत्साह से अपने फ्रेन्ड्स से मिला और कहा, 'फ्रेन्ड्स, हमारे पास दो दिन हैं। लेकिन मैं अकेला यह काम पूरा नहीं कर सकता।'

'मतलब, तुम मॉडल फिर से बनाने की बात कर रहे हो? यह तो पॉसिबल ही नहीं है।' सभी ने एक साथ कहा।

'पहले से हार मान लेंगे तो जीतने का कोई चान्स ही नहीं है। लेकिन एक बार अगर ट्राइ करेंगे तो जीतने की एक आशा है। और अब तो हमारे पास मॉडल बनाने का अनुभव भी है।'

निखिल ने सबको कन्विन्स करने की कोशिश की। हालाँकि काम आसान नहीं था, लेकिन निखिल का निश्चय पक्का था, उसने सबको फिर से कोशिश करने के लिए मना लिया।

दूसरी बार में सभी ने पहली बार की हुई गलतियों को रिपीट नहीं किया और इसी वजह से काम जल्दी पूरा हो गया।

कॉम्पिटिशन में जजेस को विन्ड मिल प्रोजेक्ट बहुत पसंद आया और उन्हें सेकन्ड प्राइज़ मिला।

जब टीम ने अपनी ट्रॉफी राघव सर के हाथ में रखी तब सर ने गर्व से सबसे कहा, 'क्या तुम जानते हो, इस ट्रॉफी से भी बड़ी जीत क्या है? मुश्किलों से गुज़र कर प्राप्त की हुई ताकत!'

उस दिन निखिल के साथ-साथ पूरी टीम को एक बड़ी सीख मिली थी, यदि निश्चय पक्का हो तो किसी भी कठिनाई को पार करना पॉसिबल है!

सेम पिंच डिफरेन्ट

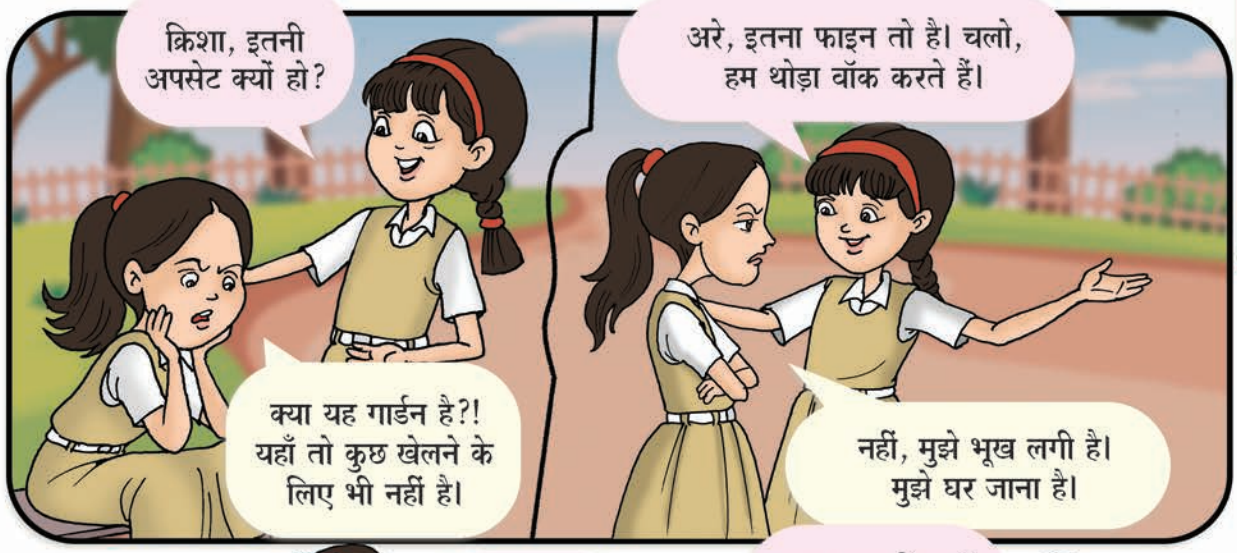
क्रिशा, इतनी अपसेट क्यों हो?
क्या यह गार्डन है?! यहाँ तो कुछ खेलने के लिए भी नहीं है।
अरे, इतना फाइन तो है। चलो, हम थोड़ा वॉक करते हैं।
नहीं, मुझे भूख लगी है। मुझे घर जाना है।

ओके बाबा... घर चलते हैं। वैसे भी मुझे पैकिंग करना है। इस वीकेन्ड पर डैडी हमें एक सरप्राइज़ जगह पर ले जा रहे हैं।

घर पर,
क्या हुआ क्रिशा? मूड क्यों खराब है?
मेरी फ्रेन्ड सलोनी ट्रिप पर जाने वाली है और मैं यहाँ बोर हो जाऊँगी।

तुम क्यों बोर होगी? हम भी इस वीकेन्ड में मिसोली जा रहे हैं।
मिसोली?! वहाँ क्या है?
तुम्हारा फेवरिट, पैराग्लाइडिंग!
वाउ पापा! यू आर द बेस्ट!

मिसोली में,

यह होटल कितना गंदा है और फूड तो बिल्कुल बेकार है। पापा, हम पैराग्लाइडिंग के लिए कब जाएँगे?

शाम को।

शाम के समय,

चलो, मैं गार्डन जाने के लिए रेडी हूँ।

गार्डन?! हम तो पैराग्लाइडिंग के लिए जाने वाले थे न?

हाँ, बाबा हाँ, पैराग्लाइडिंग स्पॉट गार्डन के पास ही है। तुम अपना एन्जॉय करना और मैं गार्डन में मज़े करूँगी।

रास्ते में सिक्युरटी पोस्ट पर,

सॉरी सर, खराब मौसम के कारण आगे रास्ता बंद है।

कब खुलेगा?

कुछ कह नहीं सकते सर। लेकिन यहाँ पास ही एक रॉक गार्डन है, जहाँ से आप खूबसूरत सीनरी देख सकते हैं।

रॉक गार्डन में,

यह कैसी विचित्र दीवार बना दी है। पीछे के पहाड़ों की सुंदरता दिखाई ही नहीं दे रही है।

जैसे हम नेगेटिविटी के पत्थर रखकर दीवार बना देते हैं, वैसी ही है न?

क्या मतलब?
सुदंरता है पर दिखाई नहीं देती। इसी तरह हम भी नेगेटिव बोल-बोलकर एक दीवार बना देते हैं।
ऐसी दीवार जो हमें अपनी आवश्यक चीज़ें प्राप्त नहीं होने देती। पॉज़िटिव रहो तो दीवार नहीं बनेगी।
कुछ समझ में नहीं आया। लेकिन मुझे कभी भी अपनी मनपसंद चीज़ मिलती ही नहीं है। मुझे घर जाना है।

सोमवार को स्कूल में,

वीकेन्ड कैसा रहा क्रिशा?
बिल्कुल बेकार, पूछो ही मत। तुम्हारा कैसा रहा?

शानदार! सरप्राइज़ जगह बहुत अच्छी थी!
अच्छा? कहाँ गए थे तुम लोग?

मिसोली। लकिली मैंने वहाँ पैराग्लाइडिंग भी की। मेरे करने के बाद मौसम बिगड़ गया और पैराग्लाइडिंग बंद हो गई।
क्या? तुम मिसोली गई थी! कैसा है ना, हम दोनों सेम जगह गए बट दोनों को अलग-अलग अनुभव हुए।
क्या? तुम भी मिसोली में थी? तो तुम्हें मज़ा क्यों नहीं आया?
क्योंकि मैंने नेगेटिविटी की दीवार बना दी थी। अब उसे तोड़ना है।
क्या?
कुछ नहीं. चलो, गार्डन में जाकर वॉक करें?

ओली का चैलेन्ज

मैं हूँ ओली उल्लू, मैं भी आलु और चिली की तरह डीडीमा जंगल में रहता हूँ। मैं बहुत पढ़ता हूँ और उसमें से अलग-अलग चैलेन्ज बनाकर आलु और चिली को सॉल्व करने के लिए देता हूँ। आज मैं आपके लिए एक चैलेन्ज लेकर आया हूँ। तो अपनी पेन्सिल के साथ रेडी हो जाओ।

आज स्कूल के नाश्ते के लिए चिली 'चिली चीज़ सैन्डविच' लाया था। आलु को वह बहुत पसंद है। जैसे ही रिसेस हुई, दोनों ने टिफिन के डिब्बे खोले। तभी दूर से थीओ आता हुआ दिखाई दिया। चिली उसे आवाज़ लगाकर सैन्डविच खाने के लिए बुलाने ही जा रहा था कि तभी आलु ने कहा, 'रहने दो, चिली! थीओ सब खा जाएगा। फिर हमारे लिए कुछ भी नहीं बचेगा।' आलु ने बहुत मज़े लेकर बहुत सारे 'चिली चीज़ सैन्डविच' खाए।

हमेशा की तरह आलु और चिली शाम को 'चिली आइस्क्रीम' खाने गए। वहाँ उन्हें पता चला कि एक नई 'मैंगो आइस्क्रीम' आई है। चिली ने तुरंत ही मना कर दिया, "छी..., मुझे नहीं खाना, मैंगो तो कितना मीठा होता है।" आलु ने 'मैंगो आइस्क्रीम' मंगाकर खाई और उसे बहुत पसंद आई लेकिन चिली ने तो चखकर भी नहीं देखा।

दोनों वहाँ से लाइब्रेरी जाकर कल्पटॉप पर पूज्यश्री का लाइव सत्संग देखने वाले थे और एक्टिविटी करने वाले थे।

तभी आलु ने सभी को तालाब में मज़ा करते हुए देखा। यह देखकर उसने चिली से कहा, 'सत्संग तो हमेशा ही देखते हैं। चलो न, आज पानी में खेलते हैं।' और दोनों लाइब्रेरी के बजाय तालाब पर पहुँच गए।

तालाब पर कोयल और नाइटिंगगैल साथ मिलकर सुरीली आवाज़ में गाना गा रहे थे। यह देखकर खुश होते हुए आलु ने चिली को भी उनके साथ गाने के लिए कहा। चिली ने एकदम घबरा कर कहा, 'मुझे उनके साथ गाना नहीं आएगा।'

इस अक्रम एक्सप्रेस को पढ़कर आपको क्या लगता है? क्या आलु-चिली ने पूरे दिन में कोई अंतराय डाले? नीचे दिए गए अंतराय आलु-चिली में से किसने डाले वह लिखो और आप उन्हें कौनसी समझ का प्रयोग करने के लिए कहोगे उसका नंबर गोलाकार के अंदर लिखो।

मुझे नहीं आता ऐसा कहा कि कुशलता पर अंतराय पड़ते हैं।

आलु चिली

यदि कुछ करने का पक्का निश्चय न हो तो उस चीज़ के अंतराय पड़ते हैं।

आलु चिली

खाने की कोई चीज़ मिली और उसका तिरस्कार किया, तो फिर वह चीज़ दोबारा नहीं मिलती।

आलु चिली

किसी को कुछ मिल रहा था और उसमें हमने रुकावट डाली, तो खुद को ज़रूरत होगी तब नहीं मिलेगा।

आलु चिली

समझ :

१. जो भी खाना मिले वह खा लें, नापसंद चीज़ हो तो थोड़ा चख लें।

२. 'मुझे क्यों नहीं आएगा?' ऐसा दृढ़तापूर्वक रहे तब अंतराय टूटते हैं।

३. बोलने के बाद तुरंत प्रतिक्रमण करें तो अंतराय पड़ने से पहले ही धुल जाते हैं। यानी मन में पश्चाताप करें, क्षमा माँगें और निश्चय करें कि ऐसा नहीं बोलना चाहिए, तो धुल सकते हैं।

४. 'जाना ही है' ऐसा पक्का निश्चय करे तो निश्चय से अंतराय टूटते हैं।

श्री ऋषभदेव भगवान का पहला पारणा

दस लाख वर्ष पहले गत चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव भगवान ने देवों की उपस्थिति में एक भव्य महोत्सव में दीक्षा ग्रहण की। प्रभु ने जिस दिन दीक्षा ग्रहण की उसी दिन से मौन भी धारण कर लिया।

जब प्रभु भिक्षा लेने जाते तब भोले-भाले ग्रामवासी प्रभु का स्वागत करने के लिए प्रभु के चरणों में सोना, मोती और रत्नों के ढ़ेर लगा देते। प्रभु मौन रहकर वहाँ से आगे चले जाते। उन्हें खाने के लिए कुछ भी नहीं मिलता। प्रभु को दीक्षा लिए तेरह महीनों से भी अधिक समय बीत च ुका था। ४०० दिनों से प्रभु का उपवास चल रहा था। गाँव-गाँव विचरते हुए एक दिन प्रभु हस्तिनापुर जा पहुँचे।

दोपहर का समय था। भिक्षा के लिए प्रभु नगर में घूम रहे थे। प्रभु आगे और लोग उनके पीछे चल रहे थे।

लोग एक-दूसरे से बातें कर रहे थे, 'प्रभु कुछ लेते नहीं हैं, प्रभु कुछ बोलते भी नहीं हैं।' नगर के लोग प्रभु को आभूषण भेंट कर रहे थे।

युवराज श्रेयांस कुमार अपने महल से बाहर निकले। लोगों के कोलाहल की आवाज उनके कानों में पड़ी। अति प्रसन्न होकर उन्होंने प्रभु के दर्शन किए। भावपूर्वक प्रभु के दर्शन करते ही श्रेयांस कुमार को ऐसा ज्ञान हुआ जिससे उन्हें पता चल गया कि प्रभु भिक्षा में क्या ग्रहण करेंगे।

तुरंत ही श्रेयांस कुमार ने प्रभु को गन्ने के रस से भरे हुए सोने के घड़े भेंट किए। श्रेयांस कुमार ने प्रभु से विनती की, 'भगवान, यह गन्ने के रस को ग्रहण कीजिए।' प्रभु ने अपने हाथों की अंजली आगे बढ़ा दी। श्रेयांस कुमार ने बहुत भावपूर्वक दिल से प्रभु को गन्ने का रस पिलाया। इस प्रकार प्रभु का प्रथम पारणा (उपवास तोड़ना) श्रेयांस कुमार ने गन्ने के रस से करवाया।

प्रभु के उपवास तोड़ने के प्रभाव से आकाश में पाँच दीपक प्रकट हुए।

ऋषभदेव प्रभु को तेरह महीनों तक भिक्षा में खाने-पीने लायक कुछ भी नहीं मिला उसके पीछे एक राज़ था।

अपने किसी पिछले जन्म में प्रभु ने एक किसान को बैलों को लकड़ी से मारते हुए देखा। कारण यह था कि काम करते समय बैल अनाज खा रहे थे। निर्दोष प्राणियों को लाठी से पिटते देख प्रभु का हृदय पसीज गया।

बैलों को मार न पड़े और बैल अनाज न खा जान् इसलिए प्रभु ने किसानों को बैलों के मुँह पर कपड़ा बाँधने की सलाह दी। काम पूरा हो जाने के बाद किसानों को कपड़ा खोलना याद नहीं रहा। परिणामस्वरूप बैल तेरह घटे तक बिना अन्न-जल के बहुत कराहते रहे।

प्रभु की सलाह के कारण बैलों को अन्न के बिना रहना पड़ा। प्रभु ने बैलों को अन्न खाने से रोका, इस भूल का परिणाम यह आया कि प्रभु को तेरह महीने तक भिक्षा नहीं मिली।

और इस तरह, प्रभु की एक छोटी सी गलती के कारण बैलों को तेरह घटे तक अन्न-जल के बिना रहना पड़ा। इसके फलस्वरूप दूसरे जन्म में प्रभु को तेरह महीनों तक भिक्षा प्राप्त करने में अंतराय का फल भोगना पड़ा।

Akram Express

October 2023
Year : 11, Issue : 7
Conti. Issue No.: 127

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111

Why are the yummy desserts melting? To find out ... make sure to read... 'Oh No! Creamland Is Melting!'

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. AGIA4313# और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. AGIA4313## अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर Whatsapp करें।

१. कच्ची पावती नंबर या ID No., २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on Behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba Multiprint, Opp. H B Kapadiya New High School, Chhtral-Pratappura Road, At-Chhatral, Tal. Kalol, Dist. Gandhinagar – 382729.